

ماہنامہ
شعاعِ عمل
لکھنؤ جون ۲۰۱۷ء

قَالَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ
بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب



نور ہدایت فاؤنڈیشن، حسینہ غفران مااب، چوک، لکھنؤ-۳



R.N.I NO. UPBIL/2004/13526

Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2017-19 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

Annual Rs. 200/-

June 2017

Per Copy- Rs.25/-

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ



علمبردار اتحاد بین المسلمین جتہ الاسلام والمسلمین صفوة العلماء مولانا سید کلب عابد نقوی رحمت مآب
ولادت یکم جمادی الثانی ۱۳۴۱ھ مطابق ۱۹ جنوری ۱۹۲۳ء وفات شنبہ ۱۰ ربیع الثانی ۱۴۰۰ھ مطابق ۱۳ دسمبر ۱۹۸۶ء

Lucknow



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufuran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

Per Copy 25/-
Annual 200/-

बिस्मिल्ली तशाला

नूरे हिदायत फाउण्डेशन के

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

जून-2017 ई०

शुआ-ए-अमल

“लखनऊ”

संरक्षक

काएदे मिल्लत मौलाना सै. कल्बे जवाद नकवी साहब

अकबर
प्रचार प्रसार

माननीय नवाब रज़ा साहब, भोपाल

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नकवी ‘असीफ़’ जायसी

उप-सम्पादक

कायम महदी नकवी ‘तज़हीब’ नगरौरी

आसिफ़ अब्बास नौगांवी

सलाहकार समिति

- प्रोफ़ेसर अल्लामा अली मुहम्मद नकवी, अलीगढ़
- डॉ० महदी ख्वाजा पीरी, ईरान
- मौलाना हसन ज़फ़र नकवी, कराची
- कैप्टन सिकन्दर रिज़वी, लखनऊ
- प्रोफ़ेसर हुसैन कमालुद्दीन अकबर, इलाहाबाद
- सै० अहमद अब्बास नकवी, मुम्बई
- शायरे अहलेबैत रज़ा सिरसिवी, सिरसी
- सै० सैफ़ तकी नकवी, दिल्ली
- मुहम्मद आलिम, हुसैनाबाद, लखनऊ

मिलने का पता

नूरे हिदायत फाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230

Mobile No: 08736009814 — 09335996808

प्रकाशक मुद्रक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नकवी द्वारा स्वामी एस कल्बे जवाद नकवी के लिए निज़ामी प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट अपोज़िट हसनैन मार्केट, चौक, लखनऊ (उ० प्र०) से मुद्रित तथा नूरे हिदायत फाउण्डेशन, इमामबाड़ा गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक लखनऊ (उ० प्र०) से प्रकाशित।
सम्पादक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नकवी

जून-2017

मासिक “शुआ-ए-अमल” लखनऊ

3

सम्पादन समिति

- ⇒ डॉ० अमानत हुसैन नक्वी
- ⇒ हैदर अब्बास नक्वी, इलाहाबाद
- ⇒ अमील शम्सी, लखनऊ
- ⇒ वासिफ अहमद नक्वी 'समीर'
- ⇒ महदी रज़ा
- ⇒ शाहिद अली आजमी
- ⇒ जुलफ़ेकार हैदर आजमी
- ⇒ अलहाज मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर
- ⇒ डॉ० आरिफ़ अब्बास
- ⇒ रेहान आलम, लखनऊ
- ⇒ सलमान हुसैन
- ⇒ बिनते ज़हरा 'नदल हिन्दी'
- ⇒ अलहाज फ़रीद महदी रिज़वी

- ज़फ़र हुसैन रिज़वी ब्यूरोचीफ़ मुम्बई
- इरफ़ान हैदर, ब्यूरोचीफ़ मध्यप्रदेश
- कैफ़ तकी नक्वी, ब्यूरोचीफ़ देहली

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

▼▼▼
Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2017-2019

●●●

WEBSITE:

www.noorehidayatfoundation.org
www.naqeeblucknow.com

E_mail:

noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com
shuaeamallucknow@gmail.com

वार्षिक अंशदान

- 1- एक साल के लिए 200/-
- 2- पांच साल के लिए 800/-
- 3- लाईफ़ मिम्बरशिप 5000/-

विषय सूची

जून 2017 ई०

रमज़ानुल मुबारक 1438 हि०

नं०	लेख व लेखक	पृष्ठ
1.	शहीदे इन्सानियत (किस्त-4) आयतुल्लाहिल उज़्मा सै० अली नक्वी नक्वी	5
2.	सिफ़ारत का इन्तेखाब मौलाना सैय्यद अकबर महदी सलीम जरवली	13
3.	हमारे मुश्किलात आयतुल्लाहिल उज़्मा सै० अली नक्वी नक्वी	16
4.	मुख्य समाचार इदारा	17

मासिक

“शुआ-ए-अमल”

(हिन्दी-उर्दू)

“ख़ानदाने इज्तेहाद नम्बर”

दैनिक नक्बी लखनऊ

और नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन से प्रकाशित
सभी किताबों को डाउनलोड करने के लिए
लॉग आन करें हमारी वेबसाइट

Log on Our Website:

www.noorehidayatfoundation.org,
www.naqeeblucknow.com

शहीदे इन्सानियत

आयतुल्लाहिल उज्जमा सैय्यदुल उलमा मौलाना सै० अली नकी नकवी ताबा सराह

चौथा बाब

इस्लाम का मुजाहिम (मुख़ालिफ़) ताक़तों से तसादुम (टकराव)

जहाँ तक आईन और निज़ाम की तशकील का तअल्लुक है पैग़म्बरे इस्लाम की ज़िन्दगी में यह मक़सद हासिल हो गया और लाखों आदमी उसके तस्लीम करने वाले और उसको हक़ कहने वाले हो गए और यह एक इन्क़ेलाब की कोई कम कामयाबी नहीं है। मगर इस इन्क़ेलाब पैदा करने में रसूल^{स०अ०} को कितनी दिक्कतें दर पेश हुईं और किन किन ताक़तों से मुकाबला करना पड़ा। यूँ तो कुछ लोग वह होते हैं जो जज़्बात के लिहाज़ से हर क़दीम शै (पुरानी चीज़) के साथ उलफ़त रखते हैं इसलिये उन्हें हर इन्क़ेलाब के मुहरिक (बानी) से बुग़ज़ लिल्लाही होता है। इलाही बैर का मतलब यह है कि चाहे इस इन्क़ेलाब का उनकी ज़ात से कोई तअल्लुक न हो और उन्हें इससे कोई नुक़सान भी न पहुँचता हो मगर वह इन्क़ेलाब से सिर्फ़ इसलिये दुश्मनी रखते हैं कि वह इन्क़ेलाब है लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिनके खुद ग़रज़ाना मफ़ाद (फ़ाएदे) क़दीम रस्मो रवाज के साथ वाबस्ता हैं और उन्हें इस इन्क़ेलाब से अपने मनाफ़े (फ़ाएदों) का खून होते हुए नज़र आता है। चुनानचे इस्लाम जो इन्क़ेलाब लेकर आया था और उसने ज़िन्दगी के हर शोबे में जो तब्दीलियाँ कर दी थीं उनसे बहुत सी किस्म

के लोगों को ज़ाती नुक़सानात पहुँच रहे थे। यह नुक़सानात माली भी थे और वजाहत (शानों शौकत) व इक्तेदार के भी। मिसाल के तौर पर इस्लाम की मआशी (मालियत) तालीम कि सूद ख़ोरी ममनूअ (मना) है, उससे क्या तमाम अरब के इन महाजनों का दीवाला नहीं निकल गया, जिनकी ज़िन्दगी ही हाजत मन्द मख़लूक का खून चूस कर अपनी हवसे दौलतमंदी को पूरा करने पर थी। फिर अगर सिर्फ़ यह होता कि सूद लो नहीं तो यह मुमकिन था कि यह लोग इस्लाम न कुबूल करके अपने को इस हुक्म की पाबन्दी से महफूज़ रखते मगर वहाँ तो यह था कि न सूद लो और न सूद दो। जाहिर है कि सूद देना काम होता है कम हैसियत ही लोगों का जो मेक़नातीसी (चुंबकीय) कशिश के साथ इस्लाम के ग़रीब परवर तालीमात की तरफ़ खिंचे चले जा रहे थे। अब अगर सरमायादार खुद इस्लाम न भी कुबूल करें तो क्या फ़ायदा। जब उनकी ज़िन्दगी का दारोमदार जिन लोगों के रूपये पर था, उन्होंने इस्लामी तालीमात पर अमल पैरा हो कर अपना हाथ खींच लिया और वह अब एक पैसा भी सूद के नाम से देने पर तय्यार नहीं। उसके अलावा इस्लाम की यह तालीम कि अफ़रादे इन्सानी में इम्तेयाज़ सिर्फ़ अख़लाके हसना (अच्छे नेचर) व फ़राएजे इलाहिया की बिना पर है। दूसरी किसी हैसियत से फ़ज़ीलत व तफ़व्वुक़ हासिल नहीं हो सकता (बरतरी हासिल नहीं हो सकती) उन लोगों के इक्तेदार पर कारी ज़र्ब थी जो उसके पहले नस्ली तफ़व्वुक़ या माल व दौलत या क़ौम व

कबीले की कसरत की बिना पर गुल्बा व इक्तेदार पर कब्जे किये हुए थे। इस्लाम ने नज़रिय-ए तफ़्बुक व इम्तेयाज़ बदल कर इसे मिलकियत में दाख़िल ख़ारिज कर दिया। इस तरह के साहेबाने इक्तेदार जितने थे वह चूँकि इस्लामी मेयारे इज़्जत के लिहाज़ से सिफ़र (0) का दर्जा रखते थे इसलिये वह कुछ न रहे और जो लोग परदेसी या मोहताज या उन लोगों की नज़र में नीच ज़ात के होने की वजह से निगाह उठाकर बात करने के काबिल न समझे जाते थे वह बड़े साहिबे इज़्जत हो गए। इसलिये कि वह अमल की कसौटी पर पुरे उतरते थे और परहेज़गारी और तक्वे में दरज-ए कमाल पर फ़ाएज़ थे। यह बात उन लोगों को ठंडे दिल से क्यों कर गवारा हो सकती थी जो अब तक इज़्जत की मसनदों पर इतमिनान के साथ बिराज रहे थे और जो ख़ल्के खुदा को खुदा के बदले खुद अपना गुलाम बनाये हुए थे।

बनी उमय्या के लिये इन तमाम मुहर्रेकात के अलावा उनकी देरीना मुख़ासिमत (पुरानी रंजिश) बनी हाशिम के साथ और ज़ाती रश्को हसद भी था जिसके मातहत उनके सरगिरोह अबू सुफ़यान ने तक्रीबन तमाम अरब को हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा^{स०अ०} के ख़िलाफ़ बरअन्नेख़्ता (उकसाना, भड़काना) कर दिया।

आपको तरह तरह की तकलीफ़ें दी जाने लगीं। जिस्म पर पत्थर मारे गए। सर पर कूड़ा फेंका गया। निजासतें डाली गईं और क़त्ल की धमकियाँ दी गईं। यहाँ तक कि जब ख़तरा बहुत बढ़ गया तो हज़रत के चचा अबू तालिब^{अ०स०} ने आपको अपने एक महफूज़ मकान में जो पहाड़ की घाटी में एक क़ले की सूरत पर था मुन्तक़िल कर दिया। तमाम कुरैश ने बाहम एक तहरीरी मुआहेदा (Agreement) किया कि बनी हाशिम से न सिर्फ़ शादी बियाह

तर्क कर दिया जाये बल्कि उनके साथ ख़रीदो फ़रोख़्त भी न की जायेगी। इसके मातहत महसूरीन (कैदियों) तक ज़रूरियाते ज़िन्दगी, पानी और खाना तक पहुँचना तक्रीबन ग़ैर मुमकिन बना दिया गया था। यह वाक़ेया बेअसत (एलाने रिसालत) के सातवें साल का है जो चार बरस तक कायम रहा। चार बरस की तवील मुद्दत के बाद यह तर्क मवालात (दोस्ती) ख़त्म हुआ और यह लोग क़ले से बाहर निकले। अब कुछ दिन तक मुख़ालिफ़तें ठंडी रहीं मगर फिर एक ही साल के अन्दर अबू तालिब और ख़दीजा दोनों की वफ़ात¹ के बाद इस मुख़ालेफ़त ने इन्तेहाई जोर पकड़ा यहाँ तक कि अहले मदीना तक इस्लाम की रौशनी फैली और उन्होंने ने आपको मदीने की तरफ़ तशरीफ़ ले जाने की दावत दी और आपने बहुत से मुसलमानों को वहाँ भेज दिया उन्हीं मुशरकीन ने आपको क़त्ल कर देने का पूरा मन्सूबा तय्यार कर लिया। जिसके बाद आपने मदीने की तरफ़ हिजरत फ़रमाई।

मदीने में आकर भी मुख़ालेफ़ीन ने चैन से बैठने न दिया। एक तरफ़ तो उन लोगों को जो आप पर ईमान लाये थे और मजबूरन मक्के में रह गए थे तरह तरह की तकलीफ़ें पहुँचाई जातीं, दूसरी तरफ़ आप के जाए पनाह मदीन-ए-मुनव्वरा पर फ़ौज कशी के इन्तेज़ामात होने लगे। आपको अपनी हिफ़ाज़त और अपने से ज़्यादा उन लोगों के घरबार की हिफ़ाज़त के लिये जिन्होंने आपको पनाह दी थी मैदाने मुकाबला में निकल आना पड़ा।

सबसे पहली जंग जो मदीने में आकर हुई बद्र की लड़ाई थी। इस मौक़े पर मुसलमान बिल्कुल तय्यार न थे सिर्फ़ तीन सौ तेरह आदमी² जिनके पास सवार होने को सिर्फ़ तीन घोड़े थे।³ और

¹तबरी जि/1, पेज/229, ²तबरी जि/2, पेज/272

³सीरते इब्ने हिशाम जि/1, पेज/407

चन्द तलवारें। मगर बनी हाशिम की तलवार ने मुकाबिल वालों के दाँत खट्टे कर दिये। हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब^{अ०स०}, उबैदा बिन हारिस और अली इब्ने अबी तालिब^{अ०स०} ने वह कारहा—ए—नुमायाँ दिखलाये कि मुख़ालिफ़ों की हिम्मत परस्त हो गई। अगरचे इस्लाम को बिल—खुसूस बनी हाशिम को यह बड़ा नुक़सान पहुँचा कि उबैदा इस जंग में शहीद हो गए मगर मक्के वालों को और बिल—खुसूस बनी उमय्या को बहुत ज़्यादा नुक़सानात से दो चार होना पड़ा। इसमें अबू सुफ़ियान को अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} के हाथ से महेज़ अपने बेटे हन्ज़ला के क़त्ल ही पर मातम करना नहीं पड़ा।⁴ बल्कि आपने उसके एक दूसरे बेटे अम्र को कैद भी किया।⁵ इसके अलावा उसकी बीवी हिन्द को अपने बाप अतबा और अपने चचा शैबा और भाई वलीद का मातम करना पड़ा।⁶

इसके बाद अबू सुफ़ियान ने अहद किया कि वह उस वक़्त तक नहायेगा नहीं जब तक कि रसूल^{स०अ०} पर चढ़ाई न करे। मगर अब मुशरकीन में आम तौर पर मुकाबले की हिम्मत न थी। मजबूरन अबू सुफ़ियान ने सिर्फ़ बराए नाम अपनी क़सम को पूरा करने के लिये दो सौ सवार कुरैश के इकट्ठा किये और उनको लेकर मदीने की तरफ़ रवाना हुआ। मदीने के हुदूद में पहुँच कर उसने रसूल के दो पैरों (मानने वालों) को क़त्ल कर डाला और खज़ूर के दरख़्तों को तबाह कर दिया। हज़रत अपने पैरुओं के साथ जंग के लिये निकल आये मगर अबू सुफ़ियान अपने साथियों के साथ ख़ौफ़ खा कर पहले ही फ़रार हो चुका था और सब भागने की जल्दी में अपने सामान के

गठठरों को रास्ते में फेंकते गए थे। उसमें ज़्यादा तर सत्तू बंधे हुए थे जो मुसलमानों को हासिल हुए। इसी वजह से इसको “जंगे सवीक़” कहते हैं क्योंकि अरबी में सवीक़ के मानी सत्तू के हैं।⁷

हिजरत के तीसरे साल वह निहायत अहम लड़ाई पेश आई जिसको ओहद की जंग कहते हैं।⁸ अकरमा, बिन अबी जेहल, अबू सुफ़ियान और हिन्द को उस वक़्त तक चैन कहाँ आ सकता था जब तक कि वह मदीने वालों से इन्तेक़ाम न लेते। मक्का वालों ने बड़ी बड़ी तय्यारियाँ की थीं। उनकी फ़ौज में कुरैशियों के अलावा ख़ानदाने कनाना और बाशिन्दगाने तहामा भी शामिल थे।⁹ फ़ौज में तीन हज़ार मुसल्लेह (हथियारों से लैस) सिपाही थे।¹⁰ उनमें सात सौ ज़िरह पोश थे। उनके बिल—मुकाबिल रसूल^{स०अ०} के साथ सात सौ आदमी थे जिनमें सिर्फ़ सौ ज़िरह पोश थे और फ़ौज में फ़क़त दो घोड़े थे।¹¹ अकरमा और ख़ालिद बिन वलीद दोनो फ़ौज के अफ़सर थे और ख़ास बात यह थी कि फ़ौज के अक़ब (पीछे) में अबू सुफ़ियान की बीवी हिन्द: मक्के की दूसरी औरतों के साथ मैदाने जंग में ढोल बजा बजा कर सिपाहियों की हौसला अफ़ज़ाई कर रही थी। हिन्द: के अशआर उस मौक़े के जो वह पढ़ रही थी कुतुबे तारीख़ में महफूज़ हैं।¹²

हिन्द: के इन्तेक़ामी जज़बात का अन्दाज़ा इससे हो सकता है कि ओहद की जंग में जब रसूल^{स०अ०} के चचा हज़रत हमज़ा शहीद हुए तो हिन्द: जज़ब—ए—इन्तेक़ाम में अपनी सिन्फ़ बल्कि इन्सानियत की हुदूद से गुज़र गई।

⁴इरशाद पेज/38

⁵सीरते इब्ने हिशाम जि/1, पेज/397

⁶इब्ने हिशाम जि/2, पेज/37, तबरी जि/2, पेज/279

⁷सीरते इब्ने हिशाम जि/2, पेज/55, तबरी जि/2, पेज/299

⁸सीरते इब्ने हिशाम जि/2, पेज/65

⁹इब्ने हिशाम जि/2, पेज/68 ¹⁰इब्ने हिशाम जि/2, पेज/69

¹¹तबरी जि/3, पेज/12 ¹²तबरी जि/3, पेज/15-16

उसने इस बरबरियत का सुबूत दिया कि जनाबे हमज़ा का पहलू चाक कराके उनका जिगर निकलवाया और उसे मुँह में रख कर चबाने की कोशिश की। और कुश्तों के कान और नाक वगैरह आज़ा—ए जिस्म का गुलूबन्द (गले का हार) और सीना बन्द बनाया।¹³ बल्कि बाज़ रावियों ने तो यहाँ तक बयान किया है कि उसने हज़रत हमज़ा के जिगर को भून कर खा लिया।¹⁴ उससे उस एनाद और दुश्मनी का अन्दाज़ा किया जा सकता है जो उस खानदान के मर्दों और औरतों के दिलों में बनी हाशिम, पैगम्बरे इस्लाम^{स०अ०} और इस्लाम के खिलाफ़ पाई जाती थी।

इस जंग में अगरचे आम तौर पर मुसलमानों की जमाअत में बड़ी अबतरी (कमज़ोरी) पैदा हो गई थी मगर आखिर में बनी हाशिम और बिल—खुसूस अली इब्ने अबी तालिब^{अ०स०} की तलवार ने मुख़ालिफ़ जमाअत को शिकस्त दी और वह हज़ीमत खुर्दा (बेइज़्ज़ती) सूरत में वापस गई। अब उनकी इन्फ़ेरादी ताक़त रसूल के मुक़ाबले में ना—काफ़ी साबित हो चुकी थी। इसलिये 5 हिजरी में आख़री कोशिश उन्होंने यह की कि जितनी जमाअतें मुल्के अरब में इस्लाम के खिलाफ़ उनको मिल सकती थीं सबको मुत्तहिद (एकजुट) किया। यहाँ तक कि यहूद को साज़ बाज़ करके अपने साथ मिलाया और इज्तेमाई ताक़त (एक जुट होकर) से दस हज़ार के लशकर के साथ वह इस जंग के लिये आये जिसको इसी जत्थाबन्दी की वजह से “जंगे अहज़ाब” के नाम से याद किया जाता है। उनके मुक़ाबले में मुसलमान तीन हज़ार थे मगर फ़ौजे मुख़ालिफ़ को इस मर्तबा भी शिकस्त का रोज़े बद देखना नसीब हुआ और उनका माय—ए—नाज़ सूरमा

¹³इब्ने हिशाम जि/2, पेज/84, तबरी जि/3, पेज/23

¹⁴इस्तीआब जि/2, पेज/786, तबरी जि/3, पेज/43

अम्र बिन अब्दवद इब्ने अबी कैस आमरी, अली इब्ने अबी तालिब^{अ०स०} के हाथ से तलवार के घाट उतरा।¹⁵ अबू सुफ़ियान को ब—हाले ख़स्ता व तबाह मक्का वापस जाना पड़ा और अब हिम्मत मुक़ाबला व लशकर कश ख़त्म हो गई मगर दिल में इन शिकस्तों से जो घाव पड़े थे वह कभी भी भर न सकते थे।

पैगम्बरे इस्लाम^{स०अ०} ने जब कुछ अरसे तक यह देखा कि अब मुशारेकीने कुरैश की तरफ़ से कोई जंगी कारवाई नहीं होती तो आपने सन 6 हिजरी में ख़ान—ए काबा की ज़ियारत (उमरा) का इरादा किया और मुसलमानों की जमाअत के साथ मक्के की तरफ़ रवाना हुए।¹⁶ आपके पास बुदने (कुर्बानी के ऊँट) थे।¹⁷ जिससे ज़ाहिर था कि आप लड़ाई के लिये नहीं जा रहे हैं। मगर जब कुरैश को रसूल के आने की ख़बर पहुंची तो वह ख़ालिद बिन वलीद की क़यादत में “कराउल ग़मीम” (नामी) मक़ाम तक रसूल^{स०अ०} का रास्ता रोकने के लिये निकल आये।

ज़ाहिर है कि मुसलमानों की हिम्मतें इसके पहले की हासिल शुदा पैदरपै फ़ुतूहात (जीत) से बढ़ी हुई थीं और सामने वही शिकस्त खुर्दा (हारी हुई) जमाअत थी जो इस वक़्त जंग के लिये कोई तय्यारी भी न कर सकी थी इसलिये यह बहुत आसान था कि आप मुक़ाबले का हुक्म दे देते और फ़ातेहाना सूरत से मक्के में दाख़िल होते मगर पैगम्बरे इस्लाम^{स०अ०} को अमन पसन्दी का सुबूत देना था। जूँही गर्दो गुबार उठता नज़र आया आपने फ़रमाया: इस रास्ते को छोड़ दो। किसी दूसरे रास्ते से आगे निकल चलो। चुनानचे दायें जानिब का रुख़ किया गया और आप “हमस” (नामी जगह)

¹⁵इब्ने हिशाम जि/2, पेज/112, तबरी जि/3, पेज/48

¹⁶इब्ने हिशाम जि/12, पेज/210, तबरी जि/3, पेज/71

¹⁷तबरी जि/3, पेज/72

की पुस्त पर से “सनियतुल मरार” (नामी जगह) से होते हुए हुदैबिया को जो रास्ता जाता है उधर मुतवज्जे हुए।¹⁸

आपकी इस अमन पसन्दी के मुज़ाहरे का जमाअते मुखालिफ़ को इस हद तक एहसास हुआ कि वह भी वापस चली गई, और उसने अब नामा व पयाम (ख़तो किताबत) का सिलसिला शुरू किया। चुनानचे उरवा बिन मसऊद सक्फ़ी ने आकर गुप्तगू-ए-सुलह का आगाज़ किया और हज़रत रसूले खुदा^{स०अ०} की सुलह पसन्दाना बातों से ऐसी खुशगवार फ़िज़ा कायम हुई कि सुहैल बिन अम्र कुरैश का नुमाइन्दा बनाकर गुप्तगू-ए सुलह के लिये हज़रत के पास भेजा गया और उसने अपनी जमाअत के मुतालबात पेश कर दिये, यह मुतालबात सब मुशरकीन के हक़ में थे और उनके ज़रिये से ब-ज़ाहिर पैग़म्बरे इस्लाम को दबाया जा रहा था मगर आपने इन सब बातों को मन्ज़ूर फ़रमा लिया और सुलहनामा मुरत्तब हो गया। इस सुलह नामे के शराएत हरबे ज़ैल थे।

- 1, रसूल इस साल अपने मुत्तबेईन (साथियों) के साथ बग़ैर ज़ियारत किये हुए वापस जायें।
- 2, दस साल तक आपस में जंग न हो।
- 3, जो शर्ख़्स कुरैश में से अपने वली (सरदार) की इजाज़त के बग़ैर रसूल अल्लाह^{स०अ०} के पास चला जाये उसको आप वापस कर देंगे मगर जब आपके पास से कोई निकल कर कुरैश के पास चला जाये तो कुरैश वापस न करेंगे।
- 4, जो क़बील-ए-रसूल^{स०अ०} का हलीफ़ (हिमायती) होना चाहे वह आपके साथ मुआहद-ए-दोस्ती कर ले और जो क़बील-ए-कुरैश के साथ

मुआहद-ए-दोस्ती करना चाहे वह उनके साथ हो जाये।

- 5, आइन्दा साल मुसलमान मक्के की ज़ियारत के लिये आ सकेंगे इस तरह कि बाशिन्दगाने मक्का तीन दिन के लिये मक्के को ख़ाली कर देंगे मगर मुसलमानों को लाज़िम होगा कि तीन दिन के अन्दर मक्के से बाहर निकल जायें और एक आदमी भी तीन दिन के बाद मक्का में रहने न पाये।

- 6, मुसलमान अपने साथ उस तरह के असलहे ला सकेंगे जैसे मुसाफ़िर अपने साथ रखते हैं, यानी तलवारें नियाम के अन्दर रखी हुई।¹⁹

यह ऐसी ग़ैर मुतवाज़िन (यकतरफ़ा) शर्तें थीं कि पैग़म्बरे इस्लाम^{स०अ०} के अक्सर साथ वालों में जो रसूल के बलन्द मसालेह की तह तक पहुंचने से कासिर थे। शदीद बेचैनी पैदा हो गई थी। तारीख़ के अलफ़ाज़ यहाँ तक हैं कि “लोगों के दिलों में अग्रे अज़ीम (रसूल के लिए गुमान) पैदा हुआ यहाँ तक कि क़रीब था कि वह हलाकत में मुबतिला हो जायें।” इसका मतलब यह है कि उनके अकायद में तज़लजुल (अक़ीदे में डगमगाहट) हो गया। ऐसा कि क़रीब था कि वह इस्लाम से मुन्हरिफ़ ही हो जायें।²⁰

इसी का नतीजा था कि जब पैग़म्बरे खुदा^{स०अ०} ने मुआहदे की तकमील के बाद असहाब से फ़रमाया कि उठो, कुर्बानियाँ करो और फिर सरों के बाल मुंडवा कर वापस चलो। तो आलम यह था कि रसूल^{स०अ०} हुक्म दे रहे थे और मजमे की अक्सरियत ख़ामोश थी। कोई तामील के लिए उठता न था। यहाँ तक कि जब हज़रत ने उनकी तरफ़ से बेऐतेनाई

¹⁹इब्ने हिशाम जि/2, पेज/216, तबरी जि/3,

पेज/79

²⁰तबरी जि/2, पेज/79

¹⁸तबरी जि/3, पेज/73

इख्तियार करके खुद जाकर कुर्बानी की और बाल मुंडवाये तो मजबूरन दूसरे लोग भी खड़े हुए और सरों के बाल मुंडना या तराशना शुरू किये मगर रंज और सदमे का यह आलम था कि मालूम होता था एक दूसरे को क़त्ल कर रहा है।²¹

लेकिन रसूल^{स०अ०} ने अपने साथियों के इन जज़्बात का कोई लिहाज़ न किया और कुफ़ार के इन जाबिराना शराएत को मन्जूर करके वापसी इख्तियार फ़रमाई। इस ख़याल से कि अगर इस मौक़े पर जंग करके मक्के को फ़तह किया जाता तो कहने को हो जाता कि रसूले इस्लाम^{स०अ०} चढ़ाई करके आये। इस तरह जारेहाना हमला (जुल्म के साथ हमला आवर होने) का इल्ज़ाम आप पर आएद किया जाता। लिहाज़ा आपने इस का मौक़ा न दिया और सुलह के शराएत की पाबन्दी इस हद तक फ़रमाई कि अभी यह तहरीर खुशक न होने पाई थी कि खुद सुहैल बिन अम्र (जो मुशरिकीन की तरफ़ से नुमाइन्द-ए सुलह था) का लड़का जो पहले से मुसलमान हो चुका था और उसे सिर्फ़ इस्लाम लाने की वजह से घर वालों ने लोहे में जकड़ दिया था। उव वक़्त मौक़ा पाकर पा ब-ज़न्जीर होने ही की हालत में वा-मुहम्मदाह, वा-मुहम्मदाह कहता हुआ आया और अपने को रसूल के सामने डाल दिया। सुहैल ने जो यह देखा तो वह खड़ा हो गया, उसे तमांचा लगाया और गरीबान पकड़ कर खींचता हुआ ले चला। उसने पुकार कर आवाज़ दी: “क्यों मुसलमानो! क्या मैं फिर मुशरिकीन ही की तरफ़ वापस कर दिया जाऊंगा कि वह मुझे दीन से मुन्हरिफ़ करने की कोशिश करें।” मगर हज़रत^{स०अ०} ने कोई तअरूज़ (एतेराज़) नहीं फ़रमाया और कहा: “ऐ अबू जन्दल! सब्र कर यह चन्द दिन

²¹तबरी जि/3, पेज/80

की तक्लीफ़ है। अल्लाह तेरे लिये और तमाम कमज़ोर मुसलमानों के लिये जो मुशरिकीन के पंजे में गिरफ़्तार हैं कोई कशाइश (आसानी) की सूरत पैदा करेगा। इस वक़्त तो हम ने इस कौम के साथ एक मुआहदा कर लिया है और इस मुआहदे की मुख़ालिफ़त हम नहीं करेंगे।”²²

गरज़ पैगम्बरे इस्लाम^{स०अ०} ने इन ग़ैर मसावियाना (ग़ैर बराबरी) शराएत पर सुलह करके मक्के से वापसी इख्तियार की और दसूरे साल मुआहदे के मुताबिक़ मक्का की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले गए, मुशरिकीन ने तीन दिन के लिये शहर ख़ाली कर दिया और रसूल^{स०अ०} अपने साथियों समेत मक्के में दाख़िल हुए। मरासिमे ज़ियारत बजा लाये और फिर हस्बे मुआहदा तीन दिन के बाद मक्के को छोड़ दिया और मदीने वापस चले गए।²³

मगर मक्के वाले इसके बाद मुआहदे के दूसरे दफ़आत (दौर में) अदमे तअरूज़ वादे पर कायम नहीं रहे। मुआहदे में कबाएल (कबीले वालों) को जो इख्तियार दिया गया था कि वह जिसके साथ चाहें शरीक हो जायें। इसके मातहत कबील-ए-खुज़ाआ पैगम्बरे इस्लाम का हलीफ़ (तरफ़दार) हुआ था और बनी बक्र ने मुशरिकीन के साथ हलीफ़ (तरफ़दार) होने का एलान किया था चूँकि इन दोनों कबीलों में क़दीम अदावत थी इसलिये दोनों हमेशा एक दूसरे के ख़िलाफ़ तय्यार रहते थे।

मगर अब जो उनमें हर एक एक जानिब मुआहदे (Argument) के रू से मुन्सलिक हो गया और यह तय पा गया कि दस बरस तक जानिबैन (दोनों तरफ़ के लोगों में)

²²तबरी जि/3, पेज/79-80

²³इब्ने हिशाम जि/2, पेज/249-250, तबरी

जि/3, पेज/100-101, बुख़ारी जि/3, पेज/36, मुस्लिम

जि/2, पेज/105

में जंग न होगी तो खुज़ाआ के लोग मुतमइन हो गए। उन्होंने असलेहे जिस्म से उतार दिये और जंग की तय्यारियाँ तर्क कर दीं।

बनी बक्र ने इस मौके को ग़नीमत समझा और बनी खुज़ाआ पर इस वक़्त जब कि वह एक पानी चश्मे के किनारे मुक़ीम थे हमला कर दिया और बहुत से लोगों को क़त्ल कर डाला।²⁴ कुरैश के आदमियों ने भी ऐलानिया नहीं तो खुफ़िया बनी बक्र को मदद पहुँचाई और वह भी खुज़ाआ की तबाही के शरीक हुए। मजबूरन क़बील-ए-खुज़ाआ का एक आदमी जिसका नाम अम्र बिन सालिम था फ़रयाद करता हुआ मदीने गया और उस वक़्त जब पैग़म्बरे खुदा^{स०अ०} असहाब के दरमियान मस्जिद में तशरीफ़ रखते थे उसने इन्तेहाई दर्द अन्गोज़ अशआर में अपने क़बीले की रूदादे ग़म सुनाई जिसके आख़िर में हस्बे ज़ैल मजमून नज़्म किया गया था।

“ऐ खुदा के रसूल^{स०अ०}! आपको मालूम हो कि कुरैश ने आपसे अहद शिकनी (वादा तोड़ना) की। बनी बक्र ने हमारे क़बीले पर चश्मे के किनारे कमीनगाह से हमला कर दिया। वह समझते थे कि हमारा कोई फ़रयाद रस नहीं है। अगर हम जंग के लिये तय्यार होते तो उनकी क्या मजाल थी कि वह हमसे मुक़ाबला करते। वह तादाद में भी कम और ताक़त में भी हमारे मुक़ाबले में हमेशा सुबुक साबित हुए। मगर हम तो नमाज़े शब में मसरूफ़ थे। उन्होंने रूकू व सुजूद की हालत में आकर हम को क़त्ल कर दिया।”

इन अशआर को पढ़ने के दौरान में आपकी हमदर्दी के तअस्सुरात इतने षदीद हो गए थे कि आपने जवाब में कोई तवील कलाम सुनने के इन्तेज़ार की ज़हमत भी देना न चाही और

²⁴इब्ने हेशाम जि/2, पेज/260, तबरी जि/3,

अशआर ख़त्म होते ही आपकी ज़बान से जो जुमला निकला वह यह था कि “क़द-नसरता या अम्र बिन सालिम” (अन्क़रीब अम्र बिन सालिम की मदद होगी) इसके नतीजे में आप इतमामे हुज्जत के दरमियान कुछ मराहिल तय करने के बाद मुसलमानों को लेकर मक्क-ए-मुअज़्जेमा की तरफ़ रवाना हो गए। अब तेवर बदले हुए थे। मुशारेकीन में ताक़ते मुक़ाबला तो अब थी ही नहीं। उन्होंने हथियार डाल देने मुनासिब समझे और इसी मजबूरी के आलम में अबू सुफ़ियान ने भी ज़ाहरी तौर पर इस्लाम कुबूल कर लिया। जिसका वाक़ेया यह है कि अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब और अबू सुफ़ियान में पुराने ज़माने की दोस्ती थी। इस रात को जब रसूल^{स०अ०} मक्के के करीब पहुंच चुके थे और मशरिकीन पर हिरास (ख़ौफ़) छाया हुआ था। अबू सुफ़ियान चन्द आदमियों के साथ रसूले खुदा की नक़लो हरकत का हाल मालूम करने के लिये शहर से बाहर निकला। इसी वक़्त अब्बास इस फ़िक्क में निकले थे कि अगर कुरैश ने पैग़म्बरे खुदा की मुख़ालिफ़त बरक़रार रखी तो यह सब आज मारे जायेंगे। अबू सुफ़ियान को वहाँ पा कर उन्होंने कहा, कुछ ख़बर है? रसूल^{स०अ०} दस हज़ार मुसलमानों की जमईयत (गिरोह) के साथ आये हैं, तुम उनका मुक़ाबला हरगिज़ नहीं कर सकते। अबू सुफ़ियान ने कहा फिर आपकी क्या राय है? मुझे क्या करना चाहिए? उन्होंने कहा। आओ मेरे साथ ऊँट पर बैठ जाओ और रसूल^{स०अ०} के पास चल कर अमान हासिल कर लो वरना अगर तुम उनके हाथ आगए तो बग़ैर क़त्ल किये न छोड़ेंगे। अबू सुफ़ियान को यह ज़रिया ग़नीमत मालूम हुआ वह नाके (ऊँट) पर पीछे बैठ गया और अब्बास उसे लिये हुए पैग़म्बर^{स०अ०} के पास हाज़िर हुए। रसूले खुदा से उसके लिये अमान चाही।

पैगम्बर^{स०३०} ने फरमाया कि अच्छा इस वक्त अमान है। सुबह को उन्हें फिर मेरे पास लाईयेगा। हस्बे हुक्म सुबह को अब्बास ने अबू सुफियान को हाजिर किया। हज़रत^{स०३०} ने उसको इस्लाम की दावत दी। वह पसो पेश करने लगा। अब्बास ने कहा इस्लाम कुबूल करो नहीं तो जान की ख़ैर नहीं। यह सुन कर अबू सुफियान ने इस्लाम कुबूल कर लिया।²⁵ बुख़ारी की रिवायत से ज़ाहिर होता है कि अबू सुफियान और उसके साथी जब मालूमात हासिल करने बाहर निकले तो इत्तेफ़ाक़ से लश्करे इस्लाम के पहरेदारों के हाथों में गिरफ़्तार हो गए और रसूल^{स०३०} की ख़िदमत में हाजिर किये गए। इस वक्त अबू सुफियान ने इस्लाम कुबूल किया।²⁶ पैगम्बर^{स०३०} खुदा^{स०३०} की यह वुसअते कल्बी थी कि आपने अबू सुफियान की न सिर्फ़ जान बख़्शी फ़रमाई बल्कि एलान कर दिया कि जो अबू सुफियान के घर में पनाह ले ले उसे भी अमान है और जो मस्जिदुल हराम (काबा) में दाख़िल हो जाये उसे अमान है और जो अपने घर का दरवाज़ा बन्द करके बैठ जाये वह भी अमान में है।²⁷ दूसरी रिवायत में मस्जिदुल हराम (काबा) में दाख़िले के बजाये यह है कि जो हथियार डाल दे उसे अमान है।²⁸ और मक्के में दाख़िल होने के बाद तो आपने सब ही की जान बख़्शी कर दी। आपने मक्के के आदमियों से जो आपके सामने थे पूछा क्यों तुम्हारा क्या ख़याल है मैं तुम्हारे साथ क्या सुलूक करूँगा? उन्होंने कहा हमें नेकी ही का गुमान है। आप हमारे फ़य्याज़ भाई हैं और फ़य्याज़ भाई के बेटे हैं। फ़रमाया: **अजहबो अफ़अन्तुम तलका** “जाओ तुम सबको मैंने छोड़ दिया।”²⁹ उसके बाद अबू सुफियान की बीवी हिन्द ने

भी जिसके इन्तेक़ामी जज़बात की तस्वीर जंगे ओहद में सामने आ चुकी है। इस्लाम कुबूल किया और जितने सख़्त और मुतअस्सिब (कट्टर) एकाबिर (सरदार) कुरैश उस वक्त बाकी थे सब ही मुसलमान हो गए।³⁰ मगर मज़कूरा (ऊपर बयान किए हुए) वाक़ेयात से हर इन्सान यह सोचने पर मजबूर है कि बेबस हो जाने के बाद आदमी सर झुका सकता है, हाथ रोक सकता है, हथियार डाल सकता है, ज़बान बन्द कर सकता है लेकिन अपने दिल में तब्दीली नहीं पैदा कर सकता। अपने क़ल्ब में यकीन की सिफ़त पैदा नहीं कर सकता। और अपनी नफ़रत को मोहब्बत से तब्दील नहीं कर सकता। वह नफ़रत व दुश्मनी जो उन हुदूद तक पहुँच चुकी थी जिनका मुज़ाहरा गुज़िशता वाक़ेयात से हो चुका है क्या इस सबके बाद मोहब्बत व अकीदत से तब्दीली हो सकती है? आम उसूले फ़ितरत और वाक़ेयात की रफ़्तार के मुताबिक़ यह बात ग़ैर मुमकिन मालूम होती है। आम फ़ितरत के मुताबिक़ सिर्फ़ इतना समझा जा सकता है कि वह दुश्मन जो अब तक फुन्कारे मारते हुए अज़दहे की तरह सामने मौजूद था अब मारे आस्तीन(आस्तीन का साँप) बन कर खुफ़िया रीशी दवानियों (साज़िश रचने लगे या मुनाफ़िक़त) के लिये आज़ाद हो गया और कोई सुबह नहीं कि दुश्मन मौजूदा सूरत में पहली सूरत से ज़्यादा ख़तरनाक साबित हो सकता है। यही ख़याल था कि उनके बारे में इस्लाम के नक्काद (इस्लाम की परख रखने वाले) हज़रत अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} का। आपने फ़रमाया: “यह लोग हकीक़तन इस्लाम नहीं लाये थे बल्कि इस्लाम के सामने उन्होंने हथियार डाल दिये थे और बस।” ●

²⁵तबरी जि/3, पेज/116

²⁶बुख़ारी जि/3, पेज/29

²⁷तबरी जि/3, पेज/116

²⁸सही मुस्लिम जि/2, पेज/104

²⁹तबरी जि/3, पेज/120)

³⁰तबरी जि/3, पेज/121

सिफारत का इन्तेखाब

मौलाना सय्यद अकबर महदी सलीम जरवली मुसन्निफ़ किताब इस्लाह मरासिमे अज़ादारी

दुनिया करवटें बदले। आलम इनकेलाब के नए-नए कलम तैयार कर के तूले ज़माना नुकूश की हैयत बदल डाले मगर आशूराए मुहर्रम 61 हि० का खुनी वाकिया अपने हकाएक के एतेबार से फ़रामोश नहीं हो सकता। बल्कि जितना ज़माना तरक्की के दौर में रौशन होता जाता है। हुसैनी कारनामों के ढके हुए राज़ सामने आते जाते हैं। और हकाएक के रूमूज़ हर तबसिरा करने वाले को नई शकल से नज़र आते हैं। हुसैन (अ०) की सियासत, शुजाअत, मज़लूमियत बल्कि तमाम अख़लाकी व रुहानी सिफ़ात में से जिस एक सिफ़त को कोई मुबसिर इतमीनान से ग़ौर करा शुरू करे तो उसकी उम्र तमाम हो जाए लेकिन मुहते सफ़र के पांच माह 13 यौम के वाकियात में से किसी एक वाकिये की तह पर कमा हक्कोहू उबूर नहीं का सकता। मैं सिर्फ़ हुसैन(अ.) की नज़रे इन्तेखाब का एक अदना नमूना पेश करना चाहता हूं कि उसके बेहतरीन नताएज पर जिस क़दर लिखा जाए कम है। क़ब्ल इसके आप अपनी मुख़तसर फ़ौज को अपने हुसूले मक़सद के लिए मैदाने करबला में लाएं। रोज़े अब्ल अपनी फ़तहे का प्रोग्राम बना चुके थे सब के पहले मक्के के क़याम में अहले कूफ़ा के शदीद इसरार पर एक ऐसी कार्रवाई की ज़रूरत थी कि दुनिया पर अहले कूफ़ा की तलवुन मिज़ाजी मकर व कैद और उसके साथ-साथ वक़ारे इमामत। सदाक़त मौरूसी, शुजाअत बनी हाशिम की कुव्वत का अन्दाज़ा हो जाए। इस ख़िदमत को अनजाम देने के लिए अपने रिजाले अहलेबेत में इतनी ज़िम्मेदारियों का हामिल सिर्फ़ मुसलिम बिन अक़ील(अ.) को पाया।

निगाहे इन्तेखाब थी जिसने पहली नज़र में जांच कर जैसा समझ लिया वैसा साबित हुआ। अपने

सफ़ीर के तारूफ़ में जो अलफ़ाज़ क़लम बन्द फ़रमाए वही मुशाहिदे में आए। मुसलिम बड़ी ज़िम्मेदारियां लेकर चले। इमाम आली मक़ाम अहले कूफ़ा के बाइसरार तमाम तलब के जवाब में तहरीर फ़रमाते हैं तुम्हारे खुतूत पै दर पै मेरी तलब में पहुंचे और सबके आख़िर में हानी इब्ने हानी और सईद बिन अब्दुल्लाह तुम सब के खुतूत और पयाम लाए कि हम लोग बे हादी और इमाम हैं जल्द तर हमारी तरफ़ आईए। तुम्हारे इसरार पर मैं अपने चचा ज़ाद भाई मुसलिम बिन अक़ील (अ०) को जो मेरे अहलेबेत हैं मेरे मोतमिद हैं तुम्हारी जानिब भेजता हूं यह तुम्हारे शहर में पहुंच कर तुम्हारे इरादे का अन्दाज़ा करेंगे। और तुम्हारे हालात से इत्तेला करेंगे। उस वक़्त मैं जल्द से जल्द तुम्हारी तरफ़ रवाना हूंगा। यह थे अलफ़ाज़ उस नामए मुबारक के जिसने इब्ने अक़ील को सिर्फ़ अहले कूफ़ा से रुशनास नहीं बल्कि दुनियाए इस्लाम को पहचनवा दिया कि इमाम की नज़रे इन्तेखाब ने अपने अहलेबेत में अपना मोतमिद और काबिले वुसूक़ क़रार दिया। उस एक ज़ात में ज़ोहद व वरा इल्म व फ़ज़ल शुजाअत व हिम्मत के जौहर मख़फ़ी थे कि इमाम ने अपना नाएब बनाकर भेजा और यह ज़ात हामिले बारे नियाबत क़रार पाई। उसी ज़ात को तमाम इख़तेयारात तफ़वीज़ हुए। कि जो उसके हाथ पर बैअत करे। उसने हुज्जतुल्लाह के हाथ पर बैअत की। जिसने उससे मुआहिदा किया। उसने हुज्जतुल्लाह से पैमान किया। जो उनसे मिला वह मुझसे मिला। जो उनसे फिरा वह खुदा और रसूल से फिरा। हुसैन(अ.) की रुहानी फ़तहे व शिकस्त उसी हाथ पर है। इतनी ज़िम्मेदारियां लेकर इमाम का सफ़ीर कूफ़े पहुंचा। कुछ समझ कर मुख़तारे सकफ़ी के घर

को दारुल इकामा करार दिया अहले कूफ़ा जमा होना शुरू हुए हर तरफ़ से हुजूम हुआ। बैअत के लिए हाथ बढ़े। एक दो नहीं, सौ पचास नहीं कम से कम अट्ठारा हजार नुफूस ने बैअत की। बैअत के अहद व पैमाने हुए कि आप जिससे लड़ेंगे उससे जंग करेंगे। और जिससे सुलह करेंगे उससे सुलह। मगर यह सब मुआहिदे रिश्ते ख़ाम या मकड़ी के जाल से ज़ियादा ना पाएदार साबित हुए। लेकिन इस तादादे कसीद में सब एक रंग व रूप के न थे। कुछ हक़ के दाने भी थे। जो कसरत में वहदत की शान दिखला गए। हबीब हों या इब्ने औसजा, सईदे कूफ़ी हों या इब्ने नाफ़े(अ.) सबको मरते-मरते यह साबित कर गए कि रूतबा शिनास बैअत करने वाले हक़ से मुनहरिफ़ नहीं होते। यह समझ बरू कर बैअत करने वाले दुनिया की बड़ी से बड़ी कुव्वत के मुक़ाबिल में अहद शिकनी करने वाले नहीं जो पैमाअ किया था समझ कर किया था। और जो मुआहिदा किया था जिन्दगी के आखिरी लमहे तक उसकी तकमील की। मरते वक़्त अपने मा बाद के लिए अगर कुछ कहा तो वही अलफ़ाज़ ज़बाने पर थे “उसीकुम बिहाज़र रजुल”। और जिस हाथ से बैअत की थी उस हाथ से हुसैन(अ.) की तरफ़ इशारा था कि इस मर्द का दामन न छोड़ना। यह थे हक़े सिफ़ारत के नताएज़ जिसके असरात 13 सौ बरस के बाद भी अपनी तरफ़ ज़ब्ब कर रहे हैं। बड़ी ज़िम्मेदारी थी एक तनहा ज़ात पर बहुत बड़ा बोझ था ग़रीब सफ़ीर पर। जिसने तनहा उन तमाम फ़राएज़ को अनजाम दिया जो एक नाइबे इमाम और जा नशीने रसूल के कायम मक़ान को अनजाम देना चाहिए।

ज़माना फिर गया दुनिया मुख़ालिफ़ हो गई वह हाथ जो बैअत में बढ़े थे तलवारें खींच कर खून बहाने के लिए बलन्द हो गए। अमन की जगह मफ़कूद हो गई। मगर इमाम का सफ़ीर अपने फ़राएज़ की अनजाम देही में हर महल पर

साबित क़दम रहा।

इब्ने ज़ियाद बानिए फ़साद हानी के घर में खुद आया। इमाम का सफ़ीर पसे पर्दा तलवार लिए मौजूद, मगर सिफ़ारत की ज़िम्मेदारियां क़बज़ए शमशीर पर हाथ रखे हुए कह रही हैं ऐ मुसलिम! ग़ैरते हाश्मी और शुजाअत के ख़िलाफ़ है कि मेज़बान के घर में धोके से दुश्मन क़त्ल किया जाए ख़बरदार हाथ न उठाना। इब्ने ज़ियाद नतीजे में आकर निकल जाता है। और हानी की हसरत दिल ही में रह जाती है।

शुजाअत व बहादुरी के जौहर दिखलाने की ज़रूरत थी कि कोई इमाम को बेबस मजबूर व नाचार समझे। तौआ का घर तीन सौ जंगी सिपाही घेरे हुए हैं। मज़लूम का सफ़ीर तनहा तलवार पकड़कर हमला करता है तमाम फ़ौज़ लुक़मए शमशीर हो जाती है। फिर इसी क़दर फ़ौज़ मदद को आती है वह भी ना काफ़ी साबित होती है इब्ने ज़ियाद का जरनल मज़ीद इमदाद का ख़्वस्तगार होता है जिसके जवाब में यज़ीद का गवर्नर कहला भेजता है कि एक मुतानफ़ि़स के गिरफ़्तार करने के लिए इस क़दर फ़ौज़ काफ़ी हुई? मुहम्मद इब्ने अशअस को कहना पड़ता है कि इब्ने ज़ियाद से कह दो कि यह कूफ़े के किसी बक्काल से लड़ाई नहीं है।

वाह रे नज़रे इनतेखाब! हुसैन(अ.) ने उस बहादूर और शुजाअत को चुन कर भेजा था जिसने अपनी तनहा कोशिश से यह साबित कर दिया कि हम को फ़ौज़ जमा करने की ज़रूरत नहीं हम अहलबैत का हर फ़र्द यज़ीदी सिपाह को शिकस्त देने के लिए काफ़ी है लेकिन हम खुद लड़कर यह इलज़ाम अपनी ज़ात पर लेना नहीं चाहते कि इस्लाम बज़ोरे शमशीर कायम हुआ। एक तरफ़ शुजाअत और फ़ने सिपागरी का यह आलम कि फ़ौजे मुख़ालिफ़ का कुछ बस नहीं चलता दूसरी तरफ़ हिफ़ाज़ते हक़ अपने फ़राएज़ सिफ़ारत इमाम का कायम मक़ाम इस तरह महफूज़ रखता है कि इब्ने अशअस मुक़ाबले से

आजिज़ आकर फ़रेब का जाल बिछाता है और कहता है मुसलिम! तुम नाहक अपनी जान देते हो तुम्हारे लिए अमान है। इसके जवाब में ज़ख़मों से चूर-चूर थका हुआ बहादुर जवाब देता है। "कसम बख़ुदा मेरा हाथ फ़ासिक व फ़ाजिर की तरफ़ बैअत के लिए न बढ़ेगा। मुझसे उसकी उममीद न रखना कि मैं इस शर्त से अमान हासिल करूँ यह था फ़र्ज़े सिफ़ारत जिसके लिए इमाम ने अपने अहलेबैत में चुन कर मुसलिम को भेजा था। इमाम की कमाल फ़िरासते रूहानी थी कि मुसलिम ऐसी ज़बर्दस्त कुव्वत को अपना सफ़ीर बनाकर भेजा जिसने शुजाअते इमाम का नमूना दिखलाकर साबित कर दिया कि इमाम की रफ़ाक़त के लिए ऐसी दो ज़ातें मौजूद थीं जो यज़ीद की कुल फ़ौज पर भारी हो सकती हैं। एक मुसलिम जिसको अपना सफ़ीर बना दिया। दूसरा अली का शेर अब्बास (अ०) जिसको अलमदार बनाया। यह दोनों कुव्वते बाजू अपने-अपने मक़ाम पर साबित कर गए कि इमाम के पास यज़ीद से मुकाबले का कितना ज़बर्दस्त सरमाया मौजूद था। मगर फ़ौज कशी खुद मनज़ूर न थी। अपनी दोनों कुव्वतों को मुताफ़रिफ़ करने के लिए एक को अपना सफ़ीर करके भेजा और दूसरे को अपना महकूम बनाकर पेशे नज़र रखा कि इन दोनों की मुत्तफ़ेका कुव्वत से शहादत की अस्ल गर्ज फ़ौत न हो जाए। मुहम्मद हनफ़िया भी दुनियाए शुजाअत पर अपनी तलवार का सिक्का बिठाल चुके थे। उनको अपना मक़ामी वसी बनाकर मदीने में छोड़ा कि यह बिफरे हुए अली के शेर क़यामत न बरपा कर दें। मुसलिम(अ.) को इस जानिसारी का वह समरा मिला कि उसने अपने मुआसेरीन में आपको सब से बलन्द मर्तबे पर पहुंचाया सैंकड़ों को मारकर मकर व विगा से गिरफ़तार होकर इब्ने ज़ियाद के सामने आए बाला ख़ाने पर लाया। रूहानियत के मेराजे कमाल पर पहुंचे, ईसा से बालातर अपकी शहादत को उरुज

हासिल हुआ। क़ातिल के हाथ में तलवार है सर पर वार हुआ चाहता है, सफ़ीर के ज़बान पर कलमए शहादतैन, दिल में खुदा की याद, पुर हसरत निगाहें इशारों में अपने आका को बुला रही हैं।

मुजरिमे इश्क़ तवामे मी कशद गूगा अस्त
तू नीज़ बर सरे बाम आका खुश तमाशा अस्त
(अख़बार असद, लखनऊ मुहर्म्म नम्बर, 1355हि. से अनुवादित)

(बक़िया पेज नं० 16 का.....)

इस बिना पर सही नहीं मालूम होता कि उन दोनों जमातों में मज़हबी इख़तेलाफ़ ही ने नुक्तए नज़र और ज़ेहनियत को इस दर्जा बदल दिया है कि दोनों फ़िरकों की तहज व मुआशेरत भी एकसां नहीं रही है इसलिए कि तहज़ीब व मुआशेरत की तशकील भी मज़हबी ख़्यालात के मातहत होती है। इसकी तशरी अगर की जाए तो बहुत कुछ कहने की ज़रूरत पड़ेगी मगर सरदस्त बस इतना मुलाहेज़ा फ़रमाइये कि तेरह सदी के तारीखी वाक़ियात जिस ख़लीज को वसी करते रहे हों वह एक दिन में कैसे पाटी जा सकती है। दुनिया में अब एक तीसरी ताक़त रह जाती है वह सरकार बरतानिया की है मगर यह ज़ाहिर है कि सरकार का आपके साथ कोई क़राबत या रिश्तेदारी नहीं है। मौजूदा दुनिया का आस्मान व ज़मीन "सियासत" है और सियासी मुसालेह अक्सरियत की खाजिर दारी व दिलजुई के मताकाज़ी। अस्ला यह है कि अगर आपकी 4 हस्ती कोई "हस्ती" हो तो नज़र उठाकर देखा भी जाए। उस सूरत में सरकार पर मौकूफ़ नहीं बल्कि बड़े भाई भी दस्ते शफ़क़त फेरेंगे। इसको मंज़ले भाई की भी निगाहे रहमत से देखेंगे। आख़िर में निगाह यहीं पर जाकर ठहरती है कि पहले अपनी कौमी ज़िंदगी की तशकील कीजिए यानी अपनी हस्ती को काएम कीजिए मगर यह किस तरह हो, जबकि हमारे यहां हर जमा की कोशिश तफ़रीक़ का नतीजा बख़्शाती है, इदारों की कसरत ने हमारे ख़्वाबे कौमियत को परेशाल कर रखा है। कोम के लिए मुत्तहिद जमियत, मुत्तहिद आरजू, मुत्तहि मक़सद की ज़रूरत है। शायद इसी लिए "आल पार्टीज़" साबित हो। इस कांफ़्रेंस के मुताल्लिक़ में अपने ख़्यालात का तफ़सील के साथ इंशाअल्लाह किसी आईदा इशाअत में इज़हार करूंगा। वस्सलाम
(सरफ़राज़, लखनऊ, सरफ़राज़ डे नम्बर, यकुम जनवरी 1940ई. से अनुवादित)

हमारे मुशकिलात

आयतुल्लाहिल उजमा सैय्यदुल उलमा मौलाना अली नकी नक्वी

आपने अंदाज़ा किया होगा कि कांग्रेस लफ़्ज़ नहीं तो मानी के ऐतेबार से, ज़ाहिर नहीं तो बातिन में ख़ालिस हिन्दू या हिन्दू परवर जमात है। यह सहीह है कि उसको आपके इम्तियाज़ी खुसूसियात से कोई अदावत या नफ़रत नहीं है। न आप ही को इससे कोई पुरखाश है। चुनांचे हिन्दुस्तान के वाक़ियात बताते हैं कि सब तरह के फ़िरका वाराना फ़सादात हुए मगर हिन्दु शिया फ़साद कभी नहीं हुआ। फिर भी ये देखिये कि जब इसका रक़बा मुशतरिक नुक़तए इस्लाम के ख़िलाफ़ होगा। तो क्या इसकी ज़द में आप न आएंगे। इसके अलावा सियासी मस्लहेत की बिना पर अगर वह मुसलमानों की किसी जमाअत की दिलजोई करना चाहे तो वह अकसरियत का दिल हाथ में लेने की कोशिश करेगी, या अक़लियत का? रह गया इंसाफ़ और कमज़ोरों की हमदरदी का सवाल वह मौजूदा ज़माने में अतंकि तनाज़ो ललबका के दरिन्दगाना ज़ब्बे ने फ़लसफ़े की शक्ल इख़तियार कर ली है, ख़्वाब व ख़्याल है। इसके अलावा यह भी है कि बाज़ मुसलमान जो जमहूर से अलग होकर इसके दस्त व बाजू या आला-ए-कार से बने हुए हैं वह उन्हीं अनासिर में से हैं कि जो आपके वुजूद को सफ़हए आलम से फ़ना कर देना चाहते हैं उन्हीं में से बाज़ अफ़राद की रज़ा मंदी के लिए लखनऊ में वह हुआ जिसने हमेशा के लिए कांग्रेस के दामन को दाग़दार बना दिया है। आपने अपने मज़हब के ऐहताराम की बिना पर इतनी रवादारी भी उनके साथ नहीं बरत सकते जैसी स्वामी श्रद्धा नन्द आनजहानी को मस्जिद जामा दहली के मिम्बर पर भेज कर या अपने माथे पर सिन्दूर का टीका लगाकर आपके अलावा बाज़ दूसरी जमातों की

तरफ़ से ज़ाहिर हुई या हो सकती है। दूसरी तरफ़ मुस्लिम लीग है यह तमाम मुसलमानों का मुशतरिक इदारा कहा जाता है और उसमें हमारी कौम के बहुत से मुमताज़ अफ़राद नुमायां दर्जे भी रखते हैं। मगर अफ़सोस है कि बहैसियते मजमूई इस इदारे का तर्ज अमल हमारे फ़िर्के के साथ मुगाएरत का रहा है बल्कि मालूम होता है कि इसे हमारे कौमी वुजूद का एहसास ही नहीं है। इफ़ेरादी तौर पर इसके बहुत से अरकान शीयों के ख़िलाफ़ तहरीकात में हिस्सा लेते रहे हैं और गुज़िश्ता इबतेला व मसाइब के दौर में वह इस फ़र्ज़ को अंजाम नहीं दे सकी जो मुसलमानों की एक मुशतरिक मरकज़ी जमात को अंजाम देना चाहिए था। हमारी जो मुमताज़ शख़सियतें वहां मौजूद हैं उनका इस फ़ज़ा में पहुंच कर अपने कौमी मफ़ाद के तहफ़फ़ुज़ से बेबस हो जाना, यह समझने के लिए काफी है कि हमारी शिरकत वहां हमारे कौमी मफ़ाद के लिए हरगिज़ मुफीद नहीं हो सकती। यह कहना कि शिया बहैसियत मजमूई वहां दाख़िल होकर अपने मफ़ाद का तहफ़फ़ुज़ कराएं खुद अपने को धोका देना है जबकि मुसलमानों को सात करोड़ की तादाद में होते हुए यह मशवरह नहीं दिया जाता कि वह कांग्रेस में जाकर अपने हुकूक़ तसलीम करायें तो शिया जिनकी तादाद मुख़ालिफ़ हलकों में बहुत कम बताई जाती है। अपनी इस बड़ी अक्सरियत से क्योकर ज़बर्दस्ती अपने मफ़ाद का तहफ़फ़ुज़ करा सकते हैं। यह ख़्याल कि हिन्दू मुस्लिम में इख़तिलाफ़ तहज़ीब व मुआशेरत का है इसलिए उनमें इत्तेहाद मुमकिन ही नहीं मगर शिया सुन्नी तहज़ीब व मुआशेरत बिल्कुल मुत्तहिद हैं

(बक़िया पेज नं० 15 पर.....)

मुख्य समाचार

लेबनान की सलामती फौज, कौम और तहरीके मुजाहेमत के मुशतरका फार्मूले का नतीजा है

न्यूज़ एजेंसी अब्ना के की रिपोर्ट के मुताबिक, सै0 हसन नस्रुल्लाह ने 2 मई मंगल को बवक्ते शाम यौमे जांबाज़ व मीलादे हज़रत अब्बास अलमदार(अ0) के सिलसिले में मुसलमानाने आलम को हदियए तबरीक पेश किया और कहा: इस्लाम और उम्मत मुस्लेमा के दिफ़ाअ में ज़ख्मी होने वालों(जांबाज़ों)का खून जाए नहीं हुआ बल्कि उस खून की बरकत से उम्मत और हमारे वतन लेबनान को अम्न की नेमत अता हुई है। उन्होंने मुजाहेमत के जांबाज़ों को बाइसे फ़ख़र गरदाना और कहा: बहुत से जांबाज़ ज़ख्मी होकर सेहेत याबी के बाद मैदाने जिहाद में पलट कर जामे शहादत नोश कर गए, हमें भी जांबाज़ों का मिशन जारी रखना चाहिए और उनकी तमाम ज़िम्मादारियाँ अपने ज़िम्मे लें। उन्होंने कहा:

1—जांबाज़ों की कुरबानियां जाए नहीं गईं बल्कि वतन और उम्मत के लिए बड़ी हुसूल याबियों का सबब बनीं और उनकी जां फ़िशानियों की वजह से लेबनान की सरहदें बुनियादी और बहुत अहम तबदीलियों से गुज़र रही हैं।

2—आज शाम के मुस्लह दहशत गरदों के निकाल बाहर करने के बाद, इरसाल के अलाके जरूद के सिवा, लेबनान की तमाम सरहदें महफूज़ और पुर अम्न हैं और इरसाल का इलाका "जरूद" भी मुस्तक़बिले करीब में पुर अम्न इलाके में तबदील होना चाहिए।

3—लेबनान की सरहदों की सलामती फौज, कौम और तहरीके मुजाहेमत के मुशतरका फार्मूले का समरा है।

4—मैं यौमे मज़दूर की मुनासेबत से मज़दूरों को मुबारक बाद अर्ज़ करता हूं। बे रोज़गारी का मसअला अहम तरीन और ख़तरनाक तरीन मसअला है जो लेबनान को दरपेश है और लेबनान की हुकूमत को यह मसअला हल कर लेना चाहिए।

5—हिज़्बुल्लाह की तरफ़ से ईसाई नुमाईन्दों के इन्तेखाब की मुख़ालेफ़त का इलज़ाम बे बुनियाद है। हमने उस आर्थोडक्स क़ानून से इत्तेफ़ाक़ किया जो पार्लीमान की एक तिहाई नशिस्तों को ईसाईयों के लिए क़रार देता है।

6—हम क़ानूने इन्तेखाबात को कौमी ज़ाविए से देखते हैं, हिज़्बुल्लाह और हरकतुल अमल(दो शिया जमाअतें) क़ानूने इन्तेखाबात से कोई इख़्तेलाफ़ नहीं रखते।

7—हम लेबनान की सियासी जमाआतों से मुतालेबा करते हैं कि इन्तेखाबात के क़ानून के सिलसिले में मतलूबा नतायज के हुसूल की ख़ातिर एक दूसरे के साथ मुफ़ाहेमत के रस्ते पर गामज़न हों और अगर ज़रूरी हो तो दूसरे फ़रीकों को रियायतें दें ताकि इन्तेखाबात के क़ानून तक पहुंच सकें।

8—लेबनान तबाही के दहाने पर खड़ा है और अगर हमारे पास एक नया क़ानून न हो तो मुल्की सियासत में दराड़ें पड़ जाएंगी और तमाम मन्फ़ी मुताबादिल ज़हूर पज़ीर होंगे। हमारा पुर अम्न मुल्क हमारे अपने हाथ में है और हमें उसे तबाही के दहाने पर नहीं पहुंचाना चाहिए।

9—हम पूरी ताक़त से सहयूनी रियासत के जेल ख़ानों में फ़िलिस्तीनी असीरों की हिमायत करते हैं और उनके साथ यकजहती का एलान करते हैं।